B.A. History Hon's Part-II

Paper: IV, Unit-I, Date: 13.8.2020 Lecture No. 17

Lession: ब्रिटेन और चीन के बीच युद्ध

19 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में चीन विश्व में धनाढ्य देश के नाम से जाना जाता था। दुनिया से वह एक सामंती समाजवाला देश था, जिसकी उत्पादन व्यवस्था में लघु किसान कृषि और घरेलू दस्तकारी उद्योग की प्रधानता थी। बहुत बड़ी संख्या में किसान समुदाय के पुरुष खेतीबारी करते थे और स्त्रियाँ कताई-बुनाई करती थी। वे अपनी आवश्यकता का अनाज, कपड़ा और अन्य चीजें स्वयं ही पैदा कर लेते थे। शुरु में चीन बड़े पैमाने पर सामान का निर्यात ही करता था और आयात छोटे पैमाने पर करते थे। आर्थिक लाभ के लोभ में यूरोप के कई देश चीन को लालच दृष्टि से देखते थे। 1840 ई. के आसपास ब्रिटेन संसार का सबसे विकसित पूँजीवादी देश था। ब्रिटेन में निर्मित सूती कपड़ा तथा ऊनी वस्तुएँ चीन के बाजार में आसानी से नहीं बिकती थी। इसलिए ब्रिटिश पूँजीपतियों को चीन से चाय, रेशम और दूसरी उत्पादित वस्तुएँ खरीदने के लिए बड़ी मात्रा में चाँदी अपने देश से लानी पड़ती थी। चाँदी के अभाव में ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कंपनी चीनी माल की कीमत चुकाने के लिए अन्य उपाय सोचने लगे। उसने अफीम का व्यापार करने का फैसला किया।

1781 ई. में कम्पनी ने पूरी तैयारी के साथ पहली बार भारतीय अफीम को बड़ी मात्रा में चीन भेजा। इसके बाद यह व्यापार दिन दूना रात चौगुना बढ़ता गया। स्वाभाविक ही एक ऐसी समस्या पैदा हो गई जिसमें चीन से निर्यात होनेवाली चाय, रेशम और अन्य वस्तुएँ का मूल्य चीन में आयात की जानेवाली अफीम का मूल्य चुकाने के लिए काफी नहीं रह गया तथा चाँदी देश के अन्दर आने के बदले देश से बाहर जाने लगी। 1800 ई. में चीन के सम्राट ने अफीम के शारीरिक और आर्थिक दुष्प्रभाव से चिंतित होकर चीन में प्रतिबन्ध लगा दिया गया। अफीम के व्यापार के मुनाफे से बहुत से व्यापारी और अफसर अमीर हो चुके थे। अफीम का वार्षिक व्यापार जो 1800 ई. में 2000 पेटियों के बराबर थी, 1838 ई. में बढ़कर 40,000 पेटियों के बराबर हो गया। इस व्यापार में बेशुमार मुनाफा कमाया जो बाद में अमेरिका के औद्योगिक विकास का आधार बना। बेहद तेज गति से चीन की चाँदी बाहर जाने लगी। 1832-35 में दो करोड़ औंस चाँदी चीन से बाहर चली गयी। इसका बोझ किसानों पर पड़ा, क्योंकि इससे अनाज के भाव गिरते गए। लेकिन जमींदार और कर वसूल करनेवालों ने पहले से अधिक अनाज वसूल करना शुरु कर दिया। 1810 ई. के बाद मंचू राजसत्ता के खिलाफ पहले से ज्यादा संख्या में और व्यापक विद्रोह हुए। 1813 ई. में तो विद्रोहियों का एक दल पेकिंग में सम्राट के राजमहल में भी घुस गया।

अफीम की व्यापार की रोकथाम के लिए पहले ज्यादा कड़े फरमान जारी करने के बाद उन्होंने लिन चेश्वी को, जो अफीम के व्यापार पर प्रतिबंध के पक्का समर्थक था, कैंटन का विशेष कमिश्नर नियुक्त कर दिया। लिन चेश्वी मार्च 1839 में कैंटन पहुँचा। वहाँ अपने अफीम व्यापारियों को आदेश दिया कि अफीम का अपना सारा स्टॉक एक निश्चित अवधि के अन्दर हवाले कर दो। चीन स्थित ब्रिटिश व्यापार अधीक्षक चार्ल्स इलियट को 20,000 पेटियों से ज्यादा अफीम जिसका वजन 11 लाख 50 हजार किलोग्राम था, चीनी अधिकारियों के हवाले करना पड़ा। जून 1839 को लिन चेश्वी ने एक आदेश जारी किया कि जब्त की हुई तमाम अफीम हूमन के समुद्रतट पर खुलेआम जला दी जाए। चीन और ब्रिटेन के बीच का तात्कालिक व्यापार पुनः शुरु करने का आदेश दिया। इसके साथ ही प्रतिबन्ध लगा दिया कि आगे से ब्रिटिश व्यापारियों को किसी भी हालत में थोड़ी भी अफीम चीन में लाने की अनुमति नहीं दी जाएगी। परिणामस्वरूप, पहला अफीम युद्ध छिड़ गया।

ब्रिटेन चीन में अपना अवैध अफीम-व्यापार जारी

खने पर तुला हुआ था, इसलिए 1840 ई. में उसने चीन के विरुद्ध पहला अफीम युद्ध छेड़ दिया। चीनी जनता हमलावरों के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष में भाग लेने के लिए उठ खड़ी हुई। उसे डर था कि यदि अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई जारी रही तो देश की जनता उसमें भाग लेकर पहले से अधिक शक्तिशाली हो जाएगी, तब स्वयं छिंग सरकार का अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा। युद्ध के परिणामस्वरूप चीन पर प्रथम बार अपमानजनक 'असमान संधियाँ' थोप दी गई। छिंग शासकों ने 1843 ई. में ब्रिटेन के साथ नानकिंग की संधि पर हस्ताक्षर किये। 1843 ई. की संधि के अनुसार - लिन चेस्वी द्वारा जब्त की गई और नष्ट की गई अफीम की क्षतिपूर्ति करनी होगी। :: हांगकांग ब्रिटेन को दे देना होगा। बाद में चलकर हांगकांग का प्रयोग ब्रिटेन ने चीन में अपनी सैनिक, राजनीतिक और आर्थिक घुसपैठ के अड्डे बन गया। :: पाँच मुख्य बन्दरगाहों को ब्रिटिश व्यापार एवं ब्रिटिश नागरिकों के लिए खोलना होगा। :: ब्रिटिश नागरिकों पर चीनी कानून लागू नहीं होंगे। :: चीन को ब्रिटेन का कृपापात्र बनकर रहना होगा। :: चीन विदेशी माल पर 5 प्रतिशत से ज्यादा आयात-कर न लगाने का वचन दिया। यह घरेलू उद्योग के विकास के लिए घातक साबित हुआ।

चीन को निर्बल देख विदेशी शक्तियों के दूत भी अपने जलपोतों पर सवार होकर ऐसी ही संधियाँ थोपने आ पहुँचे। पहला दूत संयुक्त राज्य अमेरिका से आया, उसका नाम कालेब कुशिंग। 1844 ई. में चीनी सरकार को वांगश्या संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए अमेरिकी दूत कुशिंग ने बाध्य कर दिया। इस संधि से चीन की सामंती शासकों ने जितना विशेषाधिकार ब्रिटेन को दिया था उससे अधिक अमेरिका को प्राप्त हुआ। अमेरिका के साथ हुई संधि को देख ब्रिटेन ने चीन से कुछ प्राप्त करना चाहता था। 1847 ई. में उसने चीन पर दबाव डाला कि ब्रिटेन द्वारा शासित भारत और पश्चिमी तिब्बत के बीच की सीमा को निर्धारित कर दिया जाए ताकि अपने इच्छानुसार वह जो सीमा-रेखा चाहे चीन पर थोप सके। अफीम युद्ध के संबंध में एक और महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि ईसाई मिशनरियों ने चीन की स्थिति और चीनी भाषा का जानकारी का फायदा उठाकर चीन को अपमानित करने का प्रयास किया, जबकि चीन में केवल ईसाई धर्म का प्रचार करने आये थे।

डा. गुत्जलाफ नामक एक पादरी ने ब्रिटिश अफीम कम्पनी को दुभाषिए के रूप में काम किया था तथा पुरस्कार के रूप में अपनी धार्मिक पत्रिका के लिए अनुदान प्राप्त किया था। ब्रिटिश सेना ने जब तिंगहाइ नगर आदि पर अधिकार कर लिया तब निंगपो नामक बंदरगाह का प्रशासक गुत्जलाफ को बनाया गया। अमेरिका के साथ हुई वांगश्या संधि के दौरान भी अमेरिकी ईसाई मिशनरी विलियम्स, ब्रिजमैन और पार्कर ने ही अमेरिकी दूत कुशिंग को सलाह दी थी कि एक ऐसा रुख अपनाए जिससे चीन 'झुक जाए या टूट जाए'। 1850 ई. में भारत की ब्रिटिश सरकार को अफीम के व्यापार से होनेवाला मुनाफा उसके कुल राजस्व के 20% तक पहुँच गया, जबकि चीन इस व्यापार के कारण शक्तिहीन एवं निर्धन बनता गया। चीन में अफीम का 'कानूनी' आयात 1917 ई. तक जारी रहा। चीन की भूमि पर विदेशियों को प्राप्त प्रशासनिक रियायतों को और अधिक विस्तार व अतिक्रमण करने के लिए स्प्रिंगबोर्ड के रूप में इस्तेमाल किया गया। देश का घरेलू बाजार विदेशी माल से भर दिया गया। विदेशी हमलावरों को हर्जाने की बहुत बड़ी रकम भुगतान करने के लिए देश की जनता से छिंग सरकार ने हर तरह से धन ऐंठना शुरू किया। जनता बेहद दुःखी और चीन के इतिहास में सबसे बड़े क्रांतिकारी किसान-आन्दोलन का शुभारंभ बनी।

□ डा. शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी. बी. कॉलेज, जयनगर